विचार बिन्दु

यह आत्मविश्वास रखो कि तुम पृथ्वी के सबसे आवश्यक मनुष्य हो। –गोर्की

वनों को पर्यटन उद्योग का हिस्सा बनाने की कवायद

सरकार में बैठे किसी व्यक्ति को यह घ्यान में नहीं आता कि वन विभाग का असली मकसद क्या है। खुली अर्थव्यवस्था के नये निज़ाम में शासन वन्य क्षेत्र और उसमें आबाद वन्य जीवों तथा वनस्पतियों के संरक्षण की सुध भूल कर वनों से मुनाफा कमाने वाले व्यावसायिक हितों को साधने वाला हो चला है। लगता है कि गणतांत्रिक व्यवस्था में नीति निर्माता बाज़ार की शक्तियों तथा कार्यपालिका तंत्र के इतने वशीभूत रहने लगे हैं कि उन्हें वनों के प्राकृतिक वातावरण और वहां की जैव विविधता के संरक्षण की नीतियों के पीछे के दर्शन की कोई खबर नहीं है या उनमें उसे समझने की दृष्टि ही नहीं है। इसका पता चारों तरफ अंधाधुंध और घोर अनियोजित तरीके से फैल रहे जयपुर शहर से सटे छोटे से बचे रह गये जीवंत वन क्षेत्र में व्यावसायिक तेंदुआ सफारी की दखल के राज्य सरकार के कदम से चलता है। अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर मुख्यमंत्री द्वारा जिस प्रकार जयपुर के पास आमागढ़ लेपर्ड रिजर्व को पर्यटन स्थल बताते हुए उसकी सौगात प्रदेशवासियों को समर्पित की गई उससे सरकार की मंशा और भी स्पष्ट हो गई। सारा काम कितने सुव्यवस्थित तरीके से किया गया है इसका पता इससे चलता है कि सरकार पिछले साल वन संरक्षण को पर्यटन में तब्दील करने वाली इको–टूरिज्म पॉलिसी–2021 लागू करती है और उसके साथ की तेंदुआ सफारी की परियोजना हाथ में ले लेती है। अब यह बात यहीं नहीं रुकने वाली है इसका पता मुख्यमंत्री के भाषण से भी लगता है जिसमें उनका कहना था कि वन और पर्यावरण संरक्षण के लिए राज्य सरकार द्वारा कई ऐतिहासिक फैसले लिए गए हैं जिसके तहत जयपुर के झालाना डूंगरी स्थित विश्व वानिकी उद्यान की तर्ज पर जोधपुर, बीकानेर, कोटा, उदयपुर, भरतपुर और अजमेर में भी वानिकी उद्यान विकसित किए जा रहे हैं। अब कोई उनसे यह पूछे कि क्या उन्हें वन और उद्यान में फिक्र का पता भी है। उनका वक्तव्य तो यही ध्वनि देता है कि मानो राज्य में वन विभाग को पर्यटन विभाग के साथ जोड़ दिया गया हो।

वन क्षेत्र आधुनिक मानवीय बस्तियों की तरह नहीं होता। वह अपने अंदर सम्पूर्ण संसार होता है। वन्य जीव विशेषज्ञ बताते हैं कि आमागढ़ क्षेत्र तेंदुओं के अलावा पक्षियों की सौ से अधिक प्रजातियां, और सरीसृप की कोई डेढ़ दर्जन से अधिक प्रजातियों तथा अन्य जीवों जैसे लकड़बग्गा, सियार, जंगली बिल्ली, लोमड़ी व सीबिटकैट, सांभर, नीलगाय, खरगोश आदि शामिल हैं का वास है। प्रदेश के पहले लेपर्ड रिज़र्व झालाना व नाहरगढ़ अभयारण्य के मध्य में स्थित होने के कारण यह वन क्षेत्र वन्य जीव संरक्षण एवं कॉरिडोर विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है। यह वन क्षेत्र एक उष्ण कटिबन्धीय, मिश्रित/पतझड़ /मानसूनी वन क्षेत्र है जहां मुख्यत: रेतीले समतली इलाके में टोटलिस, कुमठा, खेजड़ी तथा पहाड़ी ढलान पर धौंक, सालर, गोया खैर आदि वनस्पतियां पाई जाती हैं।

पक्षियों में स्थानीय व प्रवासी पक्षियों की करीब 250 प्रकार की प्रजातियां पाई जाती हैं। मोर, तीतर, डव, बैवलर, मैना, पैराकीट, रौबिन, वुड पैकर, बुल–बुल, शिकरा आदि स्थानीय पक्षी हैं तो पिट्टा, पैराडाइज पलाई कैचर, गोल्डन औरियल, पाइड कुक्कू, यूरेशियन कुक्कू, यूरेशियन रौलर, औरियन्ट स्कूप आउल, पैलिड स्कूप आउल, नौर्दन गौसौक, यूरेशियन स्पैरोहीक आदि पक्षी हैं जो देश–विदेश के विभिन्न कोनों से प्रजनन व भोजन की तलाश मौ यहां आते हैं। क्या उनके प्राकृतिक विहार में मानवीय खलल उचित है यह बात सरकार में बैठे लोगों की समझ में इसलिए नहीं आती क्योंकि वे प्रकृति से प्रेम करने वालों को बाज़ार की ताकतों की सीख में आकर विकास के विरोधी मान बैठे हैं। पर्यटकों के मनोरंजन के लिए इस छोटे से बचे वन क्षेत्र के तीन किलो मीटर इलाके में पेड़ काटे गए हैं औरभारी मशीनरी से पूरी पारिस्थितिकी तंत्र की प्राकृतिक व्यवस्था में विघ्न डालते हुए ट्रैक बना कर उसे पूरी तरह बेहाल किया गया है। सरकार के पास अपनी मनमानी को ठीक बताने के लिए यह मासूम दावा भी है कि जंगली जानवरों की निगरानी के लिए पेट्रोलिंग के वास्ते ऐसा आवश्यक था। कुछ समय पहले यह खबर मीडिया में छुट–पुट रूप से जरूर आई थी कि आमागढ़ वन क्षेत्र को पर्यटकों के आकर्षित करने योग्य बनाने तथा इस परियोजना को आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाने के लिए, लगभग 3 किमी के सफारी ट्रैक विकसित किया जा रहा है और अरावली पहाड़ियों के एक तरफ पेड़ों को काटा गया है। मगर जहां बाज़ार प्रायोजित व्यावसायिक परियोजनाओं के लिये इंसानों की बस्तियां उजाड़ी जाने पर समाज की चेतना पर कोई असर न होता हो वहां ऐसी अत्यंत छोटे वन क्षेत्र के बारे में सोचने के लिए किसके पास फुरसत हो सकती है।

स्टेट बोर्ड फॉर वाइल्डलाइफ के एक सदस्य का सार्वजनिक बयान था कि विभाग ने तेंदुओं के घरों में घुसकर हजारों पेड़ों को बेरहमी से काट दिया और क्षेत्र की पूरी पारिस्थितिकी को बर्बाद कर दिया। वन्यजीव पर्यटन को सामान्य पर्यटन से विभाजित करने वाली एक महीन रेखा होती है। इस कदम से इस महीन रेखा का अतिक्रमण कर दिया गया है। व्यावसायिक पर्यटन ने संरक्षण को पीछे धकेल दिया है।

तेंदुआ वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची के तहत सूचीबद्ध है जिसका अर्थ है कि इसे गंभीर सुरक्षा दी जानी है। मगर सरकारें वन्य जीवों की बजाय लालची मानव के लिये सुविधाओं का विस्तार करती हैं। वन संरक्षण का मॉडल इस विश्वास पर आधारित होता है कि संरक्षित वन क्षेत्रों को बनाकर जैव विविधता को संरक्षित किया जा सकता है क्योंकि इससे मानवीय दखल को रोक कर पारिस्थितिक तंत्र को अपना काम करने दिया जाता है।आमागढ़ में लेपर्ड कंजर्वेशन के नाम पर चार नये वाटर पॉइन्ट का निर्माण, दो पुराने वाटर पॉइन्ट का पुनरूद्धार हुआ है तथा दो नये बोरवेल लगा कर उन पर सोलर पैनल लगवाए गए हैं। इन वाटर पॉइंट्स पर पाइप लाइन के माध्यम से वन्य जीवों के लिए पीने के पानी की व्यवस्था की गई है। इसे इस वन क्षेत्र को पालतू जानवरों का एक बाड़ा बनाने का उद्यम ही कहा जा सकता है। वास्तव में सारा उद्यम वन संरक्षण का नहीं पर्यटकों की सुविधाओं का है जिसका अंदाजा अधिकृत रूप से जारी सरकारी विज्ञप्ति से होता है। इसमें कहा गया है कि इस क्षेत्र में सफारी का आयोजन सुबह और शाम दो पारियों में किया जाएगा। पर्यटकों की सुविधा के लिए सफारी टिकट ऑनलाइन उपलब्ध होंगे और बुकिंग सरकारी वेबसाइटपर की जा सकेगी। आमागढ़ सफारी के लिए भौतिक रूप से भी टिकट खरीदे जा सकेंगे जिसके लिए बिक्री की खिड़की और प्रवेश द्वार प्रसिद्ध गलता मंदिर की ओर जाने वाली सड़क पर सिसोदिया रानी बाग के ठीक आगे बनाया गया है। इस विज्ञिप्त में वन्य जीवों के संरक्षण की नहीं बल्कि पर्यटकों की मौज–मस्ती का अधिक प्रचार है। सरकारी विज्ञिप्त कहती है कि पर्यटक आमागढ़ जंगल में आकर्षक ड्राइव का मजा ले सकेंगे और ड्राइव के दौरान तेंदुए, लकड़बग्घा, रेगिस्तानी लोमड़ी और अन्य पक्षियों और जानवरों की तस्वीरें क्लिक करने के अलावा आसपास के कुछ सुंदर दृश्यों का भी आनंदले सकते हैं। पर्यटकों को सरकारी विज्ञिप्त यह सूचना भी देती है कि इस क्षेत्र के आसपास कई किले और मंदिर हैं, जैसे गलता मंदिर, आमागढ़ किला, रघुनाथ किला और अम्बामाता मंदिर। इस प्रकार सरकार इस वन क्षेत्र को पर्यटन क्षेत्र बना देने पर इठला रही है।

अब क्योंकि सारा व्यावसायिक तामझाम तेंदुए के संरक्षण के नाम पर किया जा रहा है इसलिए उसके बारे में भी सरकारी विज्ञिप्त में कुछ लिखा जाना लाजमी था। इसमें सफारी के काम की आवश्यकता को बताने के लिए कहा गया कि यह वन क्षेत्र झालाना लेपर्ड रिजर्व व नाहरगढ़ अभयारण्य के मध्य स्थित है। इस क्षेत्र में लगभग 15 लेपर्ड का आवास है। विभाग द्वारा प्रोजेक्ट लेपर्ड के तहत वन्य जीव संरक्षण के क्षेत्र में किए गए प्रयासों के फलस्वरूप वर्ष 2017 के पश्चात झालाना लेपर्ड रिजर्व में लगातार लेपर्डस की संख्या बढ़ती जा रही है। वर्ष 2018 में जहां लेपर्डस की संख्या करीब 20 थी, वहीं वर्तमान में सम्पूर्ण क्षेत्र में लेपर्डस की कुल संख्या करीब 40 है। पिछले तीन वर्षों में (जनवरी 2019 से अगस्त 2021 तक) झालाना क्षेत्र में कुल 35 शावकों का जन्म हुआ है। आमागढ़ वन क्षेत्र को लेपर्डस एवं अन्य वन्य प्राणियों ने दूसरे जंगलों में जाने के लिये कॉरिडोर के तौर पर इस्तेमाल किया है, चूंकि झालाना का जंगल केवल 1978 हैक्टेयर है यहां लेपर्ड के लिए सीमित स्थान है अत: सब–एडल्ट लेपर्ड जंगल/आवास की तलाश में आमागढ़ व लालबेरी वन क्षेत्र में आते रहे हैं एवं भविष्य में भी आते रहेंगे। इस प्रकार यहां लेपर्ड की संख्या बढ़ेगी। यह तो अधिकृत रूप से मान लिया गया कि इस वन क्षेत्र में तेंदुए संरक्षित है तथा बिना किसी सफारी परियोजना के ही उनकी संख्या भी बढ़ रही है।

पर्यावरणविदों का कहना है कि सफारी के अलावा ऊंचे स्थान से पर्यटकों को जल महल को दिखाने का भी व्यावसायिक दृष्टिकोण है। स्टेट बोर्ड फॉर वाइल्डलाइफ के एक सदस्य का सार्वजनिक बयान था कि विभाग ने तेंदुओं के घरों में घुसकर हजारों पेड़ों को बेरहमी से काट दिया और क्षेत्र की पूरी पारिस्थितिकी को बर्बाद कर दिया। वन्यजीव पर्यटन को सामान्य पर्यटन से विभाजित करने वाली एक महीन रेखा होती है। इस कदम से इस महीन रेखा का अतिक्रमण कर दिया गया है। व्यावसायिक पर्यटन ने संरक्षण को पीछे धकेल दिया है। तेंदुआ बच के रहने वाला, एकान्तप्रिय और निशाचर प्राणी है जो दिन में आम तौर पर पेड़ पर चढ़ कर सोता रहता है। जब पर्यटक सुबह शाम गाड़ियों में भर–भर कर आएंगे तब यह प्राणी और समूचा जंगल बेचैन होगा तो उससे कैसा वन संरक्षण हो सकता है इसका जवाब तो एक सामान्य बुद्धि का इंसान भी दे सकता है मगर दुर्भाग्य से वह शासन में बैठे लोगों को समझ में नहीं आता।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

वर्तमान बाजारी व्यवस्था के रहते मितव्ययता कैसे बर्तें, अपरिमित बढती महंगाई के परिपेक्ष में

आज टेक्नोलॉजी एवं विज्ञान के ज्ञान के फलस्वरूप नित नयी विकसित निर्माण उद्योगों की उत्पाद श्रृंखला से मनुष्य भ्रमित हो रहा है।

बाजार में विभिन्न प्रकार की छूटें, पेमेंट की इन्स्टालमेन्ट में अदायगी, बिना ब्याज लिए, पुराने माल की वापिसी से नयी की खरीद पर उम्मीद से अधिक डिस्काउंट, वारंटी अथवा गारंटी की निश्चिंतता, खराबी होने पर माल वापिसी से लेकर मुफ्त मरम्मत आदि ऐसे अनेक प्रलोभन बाजार उपलब्ध करा रहा है, जिनसे आकर्षित होकर उपभोक्ता अनावश्यक वस्तुओं की भी खरीद कर लेता है। मॉडर्न माल्स में खरीददार एक बास्केटनुमा ट्रोली में सजी खुली रेकों से घूम–घूम कर सामान उठा–उठा कर अपनी ट्राली में रखता जाता है, चाहे घर से चलते समय उनमे से अधिकांश वस्तुओं की जरूरत उसे नहीं थी ऐसी बेतुकी व् अनावश्यक खरीद मनुष्य का महीने का आर्थिक बजट बिगाड़ देती है।

निर्मित वस्तुओं में बिजली के उपकरण यथा–पंखे, कपडे धोने की मशीन, रूम कूलर्स, एयर कॉन्डीशनर्स, मिक्सचर्स एंड ग्रिन्डर्स, फर्नीचर मोल्डेड व् लकड़ी, ब्रांडेड सिले हुए पहनने के कपडे पुरुष व् महिलाओं के, सुगम यातायात के साधन जैसे– दो पहिया वाहन, फोर व्हीलर्स, नवीन उपकरणों (म्यूजिक प्लेयर, एयर कंडीशनर आदि) से सुसज्जित, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे– कंप्यूटर, लैब टॉप, मोबाइल, फोन्स और स्मार्ट मोबाइल फोन्स अनेकों गुणों से सज्जित, आदि विभिन्न निर्मित वस्तुएं बाजार में उपलब्ध हैं।

एक अन्य पक्ष जो बाजारीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका रखता है वो है बैंको से सुगमता से बहुत कम ब्याज पर कर्ज का मिल जाना। और प्रचार–प्रसार के लिए लाखों रुपये के प्रिंट मीडिया में फुल अखवारी पेज के विज्ञापन, ताकि लोगों में उत्सुकता उस वस्तु के प्रति बढ़ सके।

अब तो विदेशों में पढ़ाई के लिए भी बैंक लोन दे देते हैं अन्यथा बहुत बड़ी संख्या में छात्र विदेश में पढ़ाई कर मेडिकल डॉक्टर, इंजीनियर आई टी प्रोफेशनल्स, मार्केटिंग प्रबंधन, वित्तीय प्रबंधन, ह्यूमन रिसोर्स प्रबंधन व अन्य टेक्नोलॉजिकल, व्यवसायक, सूचना प्रौद्योगिकी आदि विषयों में शिक्षा व् प्रशिक्षण कैसे प्राप्त करते? क्योंकि देश में छात्रों के अनुपात में न तो वांक्षित

प्रो. (डॉ) वीर बहादुर सिंह

संस्थाएं उपलब्ध हैं और न ही वांक्षित सीटें। देश की एक बहुत बड़ी छात्रों की संख्या विदेशों की शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने को मजबूर हैं। इस प्रक्रिया का एक बड़ा नेगेटिव पक्ष भी है अधिकांश छात्र विदेश में शिक्षा ग्रहण कर विदेश में ही रोजगार में संलग्न हो जाते हैं, जहां उन्हें अनुकूल कार्य वातावरण और अपेक्षित वेतन आदि प्राप्त हो जाते हैं।

यहां पर एक दृष्टान्त है अमेरिका देश में एक बार किसी प्रेस रिपोर्टर ने प्रेजिडेंट से प्रश्न किया कि अमेरिका में पढ़ाई, अनुसन्धान व् विभिन्न किस्म के रोजगारों के लिए मेरिटोरियस लोग कैसे उपलब्ध होते हैं? प्रेजिडेंट का उत्तर सुन भारतीय लोग और राज नेता सिहिर जायेंगे, प्रेजिडेंट ने उत्तर दिया– जब तक भारत में आरक्षण लागू रहेगा तब तक अमेरिका को अपने देश में मेरिट बढ़ाने के उपाय करने की आवश्यकता नहीं होगी।

अनावश्यक स्कूटर, मोटर साइकिल और कारों का अव्यवस्थित उपयोग अवांक्षित होता है। पहनने के कपडे भी न्यूनतम रखे ताकि अनावश्यक धुलाई आदि पर खर्चा कम हो सके।

विगत कुछ ही वर्षों से एक अन्य उद्योग बाजारू क्षेत्र में विकसित हुआ है और आगे बढ़ रहा है वह है निर्मित पके–पकाये भोजन व अन्य खाद्य वस्तुओं का। इस क्षेत्र में भोजन व अन्य खाद्य सामग्री ऑन लाइन ही बुक होती है और ऑन लाइन ही घरों या ऑफिसेस में पहुंचा दी जाती है, इसमें कुछ निर्मित या पकाये हुए पदार्थ संभवत: विदेशी मूल के हैं, उनके नाम भी हम जैसे लोगों के लिए अटपटे हैं, जैसे– चाउमीन, नूडल्स, पाव भाजी, पिज़्ज़ा, मंचूरियन, हक्का नूडल, बर्गर, फ्रेंच फ्राइज आदि जिनमे स्वाद बढ़ाने के लिए एक रसायन (मोनोसोडियम ग्लूटामेट, अजीनोमोटो) उपयोग किया जाता है। इस स्वाद के लोग आदी हो जाते हैं परतु लम्बे समय तक इस रसायन के खाने से आमाशय में अम्लता बढ़ने लगती है और उपयोगकर्ता कई पाचन सम्बन्धी व्यधिओं से ग्रसित हो जाता है। इन सभी समस्याओं के होते हुए भी इन वस्तुओं का प्रचलन शहरों में तेजी से बढ़ रहा है। लोगों को व्यवसाय में संलग्न रहते घर का खाना नसीब नहीं हो पाता अत: विकल्प के रूप में यह खाद्य व्यवसाय फलफूल रहा है। बड़े शहरों में कई इंजीनियरिंग पढ़े युवा इस कार्य में पूरे समय संलग्न हैं। दूसरे देशों में पर्यटन और शीघ्र सूचना प्रणाली ने इसे विकसित करने में आग में घी का काम किया है। उपरोक्त वर्णन में से अधिकांश परिस्तिथिओं से लेखक स्वयं का सामना हुआ है। लेखक आशा करता है कि लेख पढ़ कर लोग इन मुद्दों पर वांछित विचार कर उचित कदम उठाने में तत्पर होंगे।

प्रो. (डॉ.) वीर बहादुर सिंह,
पूर्व कुलपति एवं डेरी विज्ञ,
महाराणा प्रताप कृषि एवं विवि उदयपुर।

25 लाख की लागत से बनी कोर्ट परिसर की कैन्टीन पर दो साल से लटके ताले

मालपुरा, (निसं)। स्थानीय नगरपालिका प्रशासन की उदासीनता व अनदेखी के चलते 25 लाख की लागत से कोर्ट परिसर में निर्मित दो मंजिला केन्टीन भवन पर दो साल से ताले लटके हुए हैं व भवन उद्घाटन के इंतजार मे धूल चाट रहा है। पूर्व पालिका बोर्ड में स्वीकृत केन्टीन भवन का निर्माण व शिलान्यास आनन–फानन में करवा दिया गया लेकिन दो मंजिला भवन में केन्टीन शुरू होना तो दूर भवन के ताले तक नहीं खुले। इतना ही नहीं लाखों रूपयों की लागत से केन्टीन के सामने गार्डन भी बनाया गया था। जो कि आज आवारा मवेशियों की शरणस्थली में तब्दील हो गया है।

रोजाना न्यायालय व पंचायत समिति में आने वाले हजारों नागरिकों की सुविधा के लिए बनाये गये दो मंजिला केन्टीन भवन में समय पर केन्टीन ठेका नहीं होने से बीते दो साल में पालिका को लाखों रूपयों की आय का भी घाटा होना सामने आया है। यहां तक की भवन में हुए विद्युत कनेक्शन की लाखों रूपयो की बिल राशि भी सरकारी कोष से खर्च की जा चुकी है। न्यायालय परिसर में निर्मित केन्टीन व गार्डन की हो रही दुर्दशा पर उपखण्ड प्रशासन की चुप्पी भी आश्चर्य का विषय बनी हुई है।

मालपुरा न्यायालय परिसर में पालिका द्वारा बनाई गई कैन्टीन पर दो साल से ताले लगे हुए हैं।

- **केन्टीन के सामने बना गार्डन आवारा मवेशियों की शरणस्थली में तब्दील हो गया है**
- **विद्युत कनेक्शन की लाखों रूपयों की बिल राशि भी सरकारी कोष से खर्च की जा चुकी है**

कई मृतबा रात के अंधेरे में केन्टीन परिसर में शराबियों व शरारती तत्वों की जमावडे की सूचना के बावजूद पालिका प्रशासन सब कुछ जानकर भी अनजान बना हुआ है। ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि जब केन्टीन को शुरू ही नहीं करना था तो 25 लाख की लागत से भवन का निर्माण क्यों करवाया गया। साथ ही क्यों सरकारी परिसर के बडे भाग को अवरूद्ध किया गया।

गर्मी की छुट्टियां : रचनात्मक, सृजनात्मक उत्सव क्यों नहीं

इस बारबच्चों की पढाई और परीक्षा का सिड्यूल मई के अन्तिम सप्ताह में पूरा होगा। छुट्टियाँ होते ही पूरा परिवार जश्न के मूढ में आ जाएगा। बच्चों की फरमाइश पर माता–पिता उन्हें हिल स्टेशन से लेकर पर्यटन के दर्शनीय स्थलों की सूची थमा देते हैं, फिर योजना बनती है और अपनी आर्थिक सामर्थ्य, अभिभावकों की स्वयं की छुट्टियां, घर की सुरक्षा आदि के मद्देनजर योजनाएं बनेंगी।

आपने गौर किया होगा अब बच्चे और उनके अभिभावक कुछ वर्षों पहले मनाई जाने वाली गर्मी की छुट्टियों से बहुत दूर हट चुके हैं। ज्यादा समय नहीं हुआ है जब आपने प्राय: सभी ने ऐसी नैसर्गिक और प्राकृतिक छुट्टियों का खूब लुत्फ उठाया है। दादी–नानी के घर बच्चों से गुलजार हो उठते थे। घर के बुजुर्ग महिनों पहले आने वाले नौनिहालों की आवभगत की तैयारियों में जुट जाते थे। हर रोज का एक प्लान, खाने के जायके, घरेलू खेलकूद की फहरिस्त सब रैडी होता था। बच्चों के साथ मेहमानों की रेलमपेल होती थी, बेटियाँ अपने बच्चों को अपने मां–बाप को सौंपकर घोड़े बेचकर सोने का आनन्द उठाती थी। छुट्टियों के अन्तिम सप्ताह में दामाद जी पुंहचते तो घर में आवभगत का लेवल भी पीक पर पंहुच जाता था। बिना किसी फोरमल पाठ्यक्रम के ये छुट्टियाँ बच्चों की अनौपचारिक लर्निंग का सर्वश्रेष्ठ समय होता था। यहां बच्चे खेलकूद, सृजनात्मक रचनायात्रा बात ही बात में सीख जाते थे। पर आज बुढी होती पीढी अपने नौनिहालों के आगमन की बाट निहारती निढाल हुई जा रही है बच्चों और और उनके मा बाप को फुर्सत नहीं है। समय की सच्चाई यह भी है कि आज के समय में पिता के साथ–साथ कई माएं भी जॉब करती हैं, ऐसे में उनके साथ छुट्टियां बिताना और रिश्ते–नाते निभाना टफ टास्क हो गया है। आज आपको लाखों एकाकी परिवार ऐसे देखने को मिल जाएंगे जो कहीं किसी रिश्तेदार के आते जाते ही नहीं हैं।

इन्ही बातों ध्यान में रखते हुए गर्मी की छुट्टियों के लिए स्कूल ने माता–पिता को एक गजब प्रोजेक्ट दिया। चेन्नई के इस स्कूल का नाम है अनई वायलेट मैट्रिक हायर सेकेंड्री स्कूल। जिन्होंने पहली से पांचवीं क्लास तक के बच्चों के माता–पिता के लिए होमवर्क दिया है। अपने 17 प्वॉइंट्स के होमवर्क में स्कूल ने बताया है कि अभिभावकों को क्या–क्या करना है। हद हो गई अब स्कूल यह भी बताने लगे हैं कि गर्मी की छुट्टियां बच्चों के साथ कैसे बितानी है लेकिन तनिक रुकिए जब आप स्कूल द्वारा अभिभावकों को थमाई गई लिस्ट पढेंगे तो समझ आएगा कि स्कूल ने आखिरकार ये सब क्यों कहा। चलिए पहले हम स्कूल द्वारा अभिभावकों को दिए गए होमवर्क पर निगाह डाल लें। चौंकिए मत जी हां यह होमवर्क बच्चों को नहीं अभिभावकों को ही मिला।

पर्चे पर स्कूल की तरफ से लिखा गया है– डियर पेरेंट्स, पिछले 10 महीने से हमने आपके बच्चे को पूरी तरह से ध्यान दिया। आपने भी नोटिस किया होगा कि बच्चे को स्कूल आना बहुत पसंद था। आने वाले 2 महीने आपको बच्चे

राजेन्द्र मोहन शर्मा

का ध्यान रखना होगा। उनकी छुट्टियों को यादगार बनाने के लिए हम कुछ टिप्स आपसे शेयर कर रहे हैं। अपने बच्चों के साथ दिन में दो बार खाना जरूर खाएं। उन्हें किसानों के कठिन परिश्रम के बारे में बताएं। हो सके तो खेत खलिहानों की सैर कराएं और खाना बिल्कुल भी बेकार न करने की सलाह दें। खाने के बाद उन्हें अपनी प्लेटें खुद धोने दें। ऐसा करने से बच्चे मेहनत की कीमत समझेंगे और घर पर महिलाओं पर काम का बोझ थोड़ा कम होगा।

उन्हें अपने साथ खाना बनाने में मदद करने को प्रेरित करें उन्हें उनके लिए सब्जी या फिर फ्रूट सलाद बनाने दें। कम से कम तीन पड़ोसियों के घर जाएं. उनके साथ घुले–मिलें और उनको जानने की कोशिश करें। दादा–दादी, नाना नानी के घर अवश्य जाएं और उन्हें बच्चों के साथ घुलने–मिलने दें। उनका प्यार और भावनात्मक सहारा आपके बच्चों के लिए बहुत जरूरी है। उनके साथ तस्वीरें लें और संजोकर रखें।

- **चेन्नई के एक स्कूल ने बच्चों की सृजनात्मकता बढाने व परिवेश को समझाने के लिए माता-पिता को होमवर्क दिया है**

आप जहां आप काम करते हैं, उन्हें वहां ले जाएं। उन्हें ये बताने की कोशिश करें कि आप कितनी मेहनत करके परिवार को चलाते हैं। किसी भी त्योहार को न छोडें। बच्चों को लोकल मार्केट जरूर लेकर जाएं और छोटा–मोटा सामान स्वेच्छा से खरीदने दें। अपने बच्चों से किचन गार्डन बनवाएं इसके के लिए बीज सहेजने और बोने के लिए प्रेरित करें। उनको बताएं कि पेड़–पौधे बच्चों के विकास के लिए कितने जरूरी हैं। अपने बचपन और अपने परिवार के इतिहास के बारे में बच्चों को जरूर बताएं। अपने बच्चों का बाहर जाकर खेलने दें, चोट लगने पर चिन्ता न करें, गंदा होने दें। आप जानते हैं कभी कभार गिरना और दर्द सहना उनके लिए अच्छा है। उन्हें जमीन पर चटाई बिछा कर बिठाएं और घरेलू खेल खिलाएं। उन्हें कोई पालतू जानवर जैसे कुत्ता, बिल्ली, चिड़िया या मछली को अडॉप्ट करने दें जिससे वे प्यार, सम्भाल और दायित्व जैसे भाव सीख सकें। बच्चों को उन्हें कुछ लोक गीतसिखाएं और फिर उनसे जरूर सुने।

रंग बिरंगी तस्वीरों वाली स्टोरी बुक्स लेकर आएं और बच्चों को पढ़ सुनाने को कहें। टीवी, मोबाइल फोन, कंप्यूटर और गैजेट्स से बच्चों को बहुत दूर रखें।

आप घर में लगातार कुछ न कुछ नया बनाएं और बच्चों को भी सिखाएं।

अगर आप माता–पिता हैं या दादा–दादी, नाना–नानी हैं तो इसे पढ़कर आपकी आंखें नम जरूर हुई होंगी। और आखें अगर नम हैं तो वजह साफ है कि आपके बच्चे वास्तव में आपसे से काफी दूर हो चुके हैं। स्कूल के एसाइनमेंट में लिखा एक–एक शब्द ये बता रहा है कि जब हम छोटे थे तो ये सब बातें हमारी जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा थीं, जिसके साथ हम बड़े हुए हैं, लेकिन आज हमारे ही बच्चे इन सब चीजों से दूर हैं, जिसकी वजह हम खुद हैं। अब आप ही सोच लीजिए जो काम आप आसानी से कर सकते थे वही सब हमें बच्चों के स्कूल सिखा रहे हैं। लेकिन जब जागो तभी सवेरा। तो देर किस बात की उठिए तैयारी की कीजिए अपने परिजनों से मिलने अपने बच्चों के साथ निकल पड़िए। मेहमान बनिए लुत्फ उठाईए और मेजबान बन कर चुकाइए। बच्चे बनकर खिलखिलाईए और बूढ़े बन कर मुस्कूराइए। बच्चों के जीवन कोष में मीठी स्मृतियों का खजाना संजोइए। ऐसा न हो ही आप सोचते रह जाएं और आपके वृद्ध अभिभावक पंख लगाकर आपकी बाट जोहते उड़ जाएं।

राजेन्द्र मोहन शर्मा,
साहित्यकार, शिक्षाविद् और चिन्तक

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 26 मई, 2022

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, रेवती नक्षत्र रात्रि 12:38 तक, आयुष्मान योग रात्रि 10:14 तक, बालव करण दिन 10:55 तक, चन्द्रमा रात्रि 12:38 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–वृष, चन्द्रमा–मीन, मंगल–मीन, बुध–वृष, गुरू–मीन, शुक्र–मेष, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन–रात है। आज आपरा एकादशी, भद्रकाली एकादशी है। पंचक रात्रि 12:38 पर समाप्त होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:20 तक, चर 10:42 से 12:24 तक, लाभ–अमृत 12:24 से 3:46 तक, शुभ 5:28 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:34, सूर्यास्त 7:09

मेष

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। धार्मिक–सामाजिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यक्तिगत कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है।

वृष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कर्क

धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

तुला

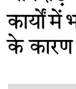

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त हो सकते हैं।

वृश्चिक

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

धनु

घर–परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। परिवार में वाद–विवाद बढ़ सकते हैं और अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मकर

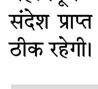

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

मीन

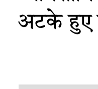

मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी और महत्वपूर्ण कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।